'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

# विनोबा-प्रवचन

( सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित )

वर्ष ३, अंक २९ | वाराणसी, मंगलवार, १० मार्च, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

कोबा (अहमदाबाद) २२-१२-'५८

## नये कार्यकर्ता तैयार करें

मुझे अभी सरलादेवी ने बतलाया कि यहाँ पचपन गाँवों के लोग आये हैं। यह बड़ी खुशी की बात है। इनका आना कोई आश्चर्य की बात नहीं, क्योंकि कोबा स्थान ही ऐसा है कि यहाँसे सेवा का वातावरण चारों ओर फैलता है। यहाँ वर्षों से काम चल रहा है। जैसे अंधेरे के बीच दीपक होने पर उसका प्रकाश आसपास चारों ओर फैलता है, वैसे ही जिस क्षेत्र में एकमात्र ऐसी सेवा की संस्था चलती हो तो उसका प्रकाश चारों ओर अवश्य फैलेगा। बहुतों का ध्यान उस ओर आकृष्ट होगा। अतः यहाँ पचास-पचपन गाँवों के लोगों का आना स्वाभाविक ही है।

### आश्रम ग्राम-स्वराज्य का केंद्र बने

मैं चाहता हूँ कि यह स्थान दिन प्रतिदिन, खासकर गाँवों के लिए आकर्षक बने। यों तो यह स्थान सेवा के लिए ही बनाया गया है। यहाँ लड़कियों को सेवा की शिक्षा दी जाती है। वे उसे पाकर गाँव की सेवा करें, यह कल्पना है। इसलिए गाँव के आसपास के लोगों को समझना चाहिए कि यह केन्द्र हमारा ही केन्द्र है। भले ही इसकी शुरूआत 'कस्तूरबा-निधि' से हुई हो, फिर भी 'यह हमारा ही स्थान है और हमें इसे चलाना है' यह समझना चाहिए। इस तरह यदि वे अपनी लड़कियों को यहाँ शिक्षण पाने के लिए भेजें तो वे यहाँसे शिक्षित हो आसपास के गाँवों की सेवा कर सकती हैं। इन्हें रखने का प्रबन्ध गाँववाले करें और आश्रम के लिए आवश्यक साधनों की व्यवस्था कस्तूरबा-निधि की ओर से होगी।

सारांश, इसे अपना ही आश्रम समझकर चलाना चाहिए। एक तो अपनी ओर से पोषण दिया जाय और दूसरे, अपनी लड़कियों एवं स्त्रियों को यहाँ शिक्षा पाने के लिए भेजा जाय। इस तरह आप लोग दुहरी सेवा करें तो इसके द्वारा आसपास के गाँव चमक उठेंगे। हम गाँवों को यह शिक्षा देना चाहते हैं कि हर गाँव स्वावलम्बी बने। यदि इस दिशा में यह स्थान प्रगति करता है तो निश्चय ही ग्राम-स्वराज्य का केन्द्र बन सकता है। इसमें मुख्यतः स्त्रियाँ होंगी और वे यहीं तैयार होंगी।

### बहनें गाँवभर की माताएँ बनें

बहुतों की धारणा है कि समाज-सेवा के काम के लिए पुरुष ही मैदान में आयें। स्त्रियाँ तो घर को ही सँभाले रहें, यही ठीक है। साधारणतः यह ठीक ही है। यह गलत कल्पना है, ऐसी बात नहीं। स्त्रियाँ घर पर अवश्य काम करें। फिर भी वे यह ध्यान रखें कि घर में जैसे उनके बच्चे हैं, वैसे ही सभीके बच्चे हैं। इसलिए सभीको जमीन मिलनी चाहिए। यदि स्त्रियाँ ऐसा मानने लग जायँ तो कोई भी बच्चा दुःखी नहीं रहेगा। किसी बच्चे की माँ मर जाय तो दूसरी स्त्री उसकी माँ बन जाय और उसका पालन-पोषण करे। यदि ऐसा हो तो कोई भी बच्चा अनाथ न बने। आज तो हर बच्चे को एक बाप और एक ही माँ होती है, लेकिन ग्रामदान में तो हर बालक को यह मालूम पड़ना चाहिए कि गाँव की सारी बहनें हमारी माँ हैं। हर बच्चे को उनसे माता का प्रेम मिलना चाहिए। इस तरह हम सारे गाँव को परिवार बनाना चाहते हैं। इसी तरह गाँव में सभी एक-दूसरे की चिन्ता करते जायँ तो ग्राम-स्वराज्य हो सकता है।

### जमीन की मालकियत मिटाइये

ग्राम-स्वराज्य का आधार है—जमीन सबकी मालकियत की बना देना। यह काम कानून से नहीं हो सकता। बच्चे को दूध पिलाने के लिए या उसका पालन-पोषण करने के लिए माता किसी कानून से बाध्य नहीं। यदि वह उनका पोषण न करें, रात-रात जागकर उनकी सेवा न करें तो बच्चों का क्या हाल होगा? क्या कोई कानून उन्हें ऐसा करने के लिए बाध्य करता है? नहीं, वे तो इसे स्वधर्म समझकर करती हैं, सहज भाव से करती हैं। इसी तरह जमीन का प्रश्न भी कानून से हल नहीं हो सकता, वह तो प्रेम से ही हल होगा। गाँव की जमीन सबकी हो। गाँव की उन्नति के लिए सभी एकत्र होकर विचार करें। तदर्थ सम्मिलित प्रयत्न करें। यह सब होगा तो निश्चय ही ग्राम-स्वराज्य स्थापित हो जायगा।

### ग्राम-सेवकों की आवश्यकता

इसके लिए ग्राम-सेवकों की आवश्यकता है। घर में रहनेवाले पहले घर का काम देखते हैं और उसके बाद ही गाँव के काम में ध्यान दे सकते हैं। इसलिए गाँव की सेवा के लिए पूरा समय देनेवाले, सिर्फ गाँव का ही चिन्तन करनेवाले सेवक

अत्यावश्यक हैं। मैं तो प्रति पाँच हजार लोगों के पीछे एक सेवक की माँग करता हूँ। अहमदाबाद जिले के लिए दो सौ सेवक मिल जायँ तो उस जिले का काम पूरा हो जायगा। इस तरह हर जिले में हो तो सेवा का काम शुरू हो जाय। इन सेवकों के लिए लोगों की सम्मति चाहिए, इसलिए हर घर में सर्वोदय-पात्र भी रखा जाय।

आज ही खण्डूभाई हिसाब लगा रहे थे कि आप ७॥ वर्षों से घूम रहे हैं तो लगभग ३० हजार गाँव घूमे होंगे। बात सच है। मान लीजिये कि हर गाँव में १० गाँववालों ने मेरा सन्देश सुना होगा तो ३ करोड़ से अधिक लोग मेरा सन्देश सुन चुके होंगे। इस तरह जब ७ वर्षों में ३ करोड़ तो ३७ करोड़ लोगों के लिए कितना समय लगेगा? क्या यह कार्यक्रम मुझ अकेले से पूरा हो सकेगा? इसलिए आप सबको इसपर विचार करना चाहिए। यह सरलादेवी का काम है। खण्डूभाई का काम है। जिनका थोड़ा-बहुत प्रभाव हो, उनका काम है। आप सभी मिलकर ३ महीने में सर्वोदय-पात्र का काम पूरा कर लें। रविशंकर महाराज अब वृद्ध हो गये हैं, इसलिए वे तो वृद्ध के नाते अपने अनुभव बतायेंगे। इसलिए आप लोगों को नये कार्यकर्ता ही खड़े करने होंगे। वे गाँव-गाँव जाकर सन्देश पहुँचायें तो बहुत ही अच्छा काम होगा।

स्वराज्य का आनन्द तभी मिलेगा, जब गाँव-गाँव स्वराज्य आयेगा और स्वतन्त्र जन-शक्ति खड़ी होगी। दिल्ली के सूर्योदय से यहाँका अँधेरा नहीं मिट पाता। इसी तरह वहाँके स्वराज्य से यहाँ कुछ आनन्द नहीं आयेगा। इसलिए यहीं ग्राम-स्वराज्य होना चाहिए। आजकल मैं सदैव यही जपता रहता हूँ। दो दिन पहले अहमदाबाद में २॥ लाख जनता के बीच मैंने यही कहा था कि अहमदाबाद के घर-घर में सर्वोदय-पात्र की स्थापना की जाय। इस तरह करुणा-बुद्धि और योजना-शक्ति दोनों से काम लेकर भारत में स्वतन्त्र जन-शक्ति खड़ी की जाय। ध्यान रहे कि सर्वोदय के प्रति लोगों में जितनी श्रद्धा और उत्साह है, उतना और किसी भी आन्दोलन में नहीं। यदि आपको इस उत्साह का उपयोग करने का शौक हो तो यह सब अपने आप हो सकता है। बापू ने आप लोगों से जो आशा रखी थी, उसे आप सफल बना सकते हैं, इसमें मुझे तनिक भी सन्देह नहीं।

डाँगरवा ( महेसाणा ) २४-१२-'५८

प्रार्थना-प्रवचन

# एक ओर सर्वोदय-पात्र, दूसरी ओर सेवक

महाभारत में एक बहुत सुन्दर कहानी आती है। अभिमन्यु शत्रुओं के बीच अकेला पड़ गया। उसने बहुत ही शूरता दिखायी, पर कोई भी उसकी मदद के लिए नहीं आया। इसलिए वह जयद्रथ के हाथों मारा गया। अर्जुन उस समय दूर था। जब उसने अपने पुत्र के वध की बात सुनी तो बहुत ही दुःखी हुआ और उसने प्रतिज्ञा की कि 'सूर्यास्त तक जयद्रथ का वध न करूँ तो मर जाऊँगा।' भगवान कृष्ण उसकी इस प्रतिज्ञा से बहुत ही चिन्तित हो उठे। सिर्फ चार घंटे ही दिन बाकी था, इतने अल्प समय में यह कैसे हो पायेगा—यही वे सोचने लगे। फिर उन्होंने सुदर्शन चक्र का प्रयोग कर सूर्य को ढँक दिया, जिससे सभी समझ गये कि सूर्यास्त हो गया। अर्जुन जल मरने को तैयार हो गया। यह देखने के लिए जयद्रथ वहाँ आ पहुँचा। यह देख भगवान ने पुनः सुदर्शन चक्र वापस खींच लिया और उन्होंने अर्जुन से कहा: अयं सूर्यः, अयं जयद्रथः। याने यह सूर्य है और यह जयद्रथ! फिर अर्जुन ने जयद्रथ पर बाणों की बौछार शुरू कर दी और उसका वध कर डाला!

## शान्ति-सैनिक आसमान के फरिश्ते नहीं

आप पूछ सकते हैं कि मुझे आज इस कथा का स्मरण क्यों हो आया? यहाँ एक भाई ने घोषित किया कि इतने गाँवों ने सर्वोदय-पात्र का सामूहिक संकल्प किया और इतने सैनिक बने हैं। इन दोनों बातों का योग हो जाय तो सारा काम बन जाय। नहीं तो लोग कहने लगते हैं कि सर्वोदय-पात्र तो हो जायगा, पर उसमें छोड़े जानेवाले अनाज की क्या व्यवस्था होगी? इसके लिए शान्ति-सैनिक कहाँसे मिलेंगे? उत्तर यही है कि जहाँसे सर्वोदय-पात्र मिलेंगे, वहींसे शान्ति-सैनिक भी हासिल होंगे। जहाँ गेहूँ पैदा होता है, वहीं उसे खानेवाले कीड़े भी पैदा होते हैं। वे उन्हींमें से पैदा होकर उन्हें खाते हैं। इसी तरह जिस गाँव में सर्वोदय-पात्र हो, वहींसे शान्ति-सैनिक भी मिलने चाहिए।

लोग सोचते हैं कि सर्वोदय-पात्र तो हम लोग रखेंगे, पर क्या सेवक आसमान से उतर पड़ेंगे? इस तरह हम फरिश्ता आसमानी सेवक चाहते हैं। इतने सारे लोग बैठे हैं और पूछते हैं कि सेवक कहाँसे मिलेंगे? क्या ये सेवक किसी बगीचे में या खान में पैदा होंगे? यह तो ग्राम-स्वराज्य की योजना है और स्वराज्य का अर्थ है, अपनी योजना हम ही बनायें। जब हम अपनी योजना खुद बनायेंगे और उसपर अमल करेंगे, तभी बुद्धि का विकास होगा। जिस योजना में बुद्धि का विकास नहीं, उसमें स्वराज्य भी नहीं है। दिल्ली में बुद्धि का भंडार भरा है और हम लोग 'बुद्धू' याने मूर्ख बन गये हैं। फिर वे लोग योजना तो करते हैं, पर मूर्ख होने के कारण हम उसपर अमल ही कैसे कर पायेंगे?

## अपनी योजना स्वयं बनायें

एक बार आश्रम में एक मुल्ला आये। अच्छे आदमी थे। कहने लगे कि 'क्या अपनी प्रार्थना में मुझे बैठने देंगे?' प्रार्थना में बैठने के बाद उन्होंने कहा कि 'मुझे कुछ कहने को अवसर दें तो धर्म की ही बातें कहूँ।' फिर उन्होंने कहा कि 'आप सब लोग चरखा चलाते हैं न? यह चरखा इस्लाम का सिद्धान्त साबित करता है। चरखा है, इसलिए उसका बनानेवाला है। इसी तरह सृष्टि है, इसलिए उसका बनानेवाला ईश्वर भी है।' दूसरी बात उन्होंने यह कही कि परमात्मा एक है। इसे सिद्ध करते हुए उन्होंने बताया कि मान लीजिये इस चरखे पर दो आदमी काम करें, एक आदमी चक्र घुमाये और दूसरा पूनी खींचकर तार निकाले तो वह चल नहीं सकता। इसी तरह अगर परमात्मा भी दो हों तो दुनिया का काम भली-भाँति कभी न चलेगा। इसलिए परमात्मा एक ही होना चाहिए। इस तरह उन्होंने चरखे पर से इस्लाम के दो सिद्धान्त साबित किये—एक तो ईश्वर होना चाहिए और दूसरा, वह एक ही होना चाहिए।

मैं कहना यह चाहता था कि इसी तरह हमारी योजना बनानेवाले वे दिल्लीश्वर और हम लोग देहातेश्वर हों तो काम न चलेगा। वे योजना करें और हम उनपर अमल करें, यह चल नहीं सकता। याने जो योजना करे, वही उसे अमल में ला सकता है। जब हम अपने अनुकूल योजना करेंगे, तभी वह हमसे सपर

सकती है। इसलिए गाँव की स्वतन्त्र योजना ही होनी चाहिए। तभी गाँव-गाँव में स्वराज्य होगा।

## गाँव की बनी चीजें ही अपनायें

जब हम लोगों ने स्वराज्य हासिल करने का विचार किया तो उसके साधन क्या हों, यह सवाल खड़ा हो गया। आखिर तय हुआ कि विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया जाय। देश के स्वराज्य के लिए विदेशी माल का बहिष्कार जरूरी है। इसके फलस्वरूप हम देख रहे हैं कि आज हमें स्वराज्य प्राप्त है, किन्तु अभी भी ग्राम-स्वराज्य हासिल नहीं हो पाया है। स्पष्ट है कि इसके लिए हमें गाँव से बाहर का मामूली माल भी गाँव में आने पर रोक लगानी होगी, तभी वह प्राप्त होगा। गाँव में तिल पैदा होते हैं तो उससे गाँव में ही तेल बना लेना पड़ेगा। गाँव में ईख होती है तो उससे गुड़ बना लें। गाँव की मिट्टी से ईंटें बना लें। मतलब यह कि गाँव की आवश्यकता की सारी चीजें गाँव में ही बनाकर हम उनका उपयोग करें, तभी हमें ग्राम-स्वराज्य प्राप्त हो सकेगा।

## पैसे की माया से बचें

पूछा जा सकता है कि यदि गाँव की चीजें महँगी पड़ जायँ, तब क्या हो? लेकिन यह सस्ते और महँगेपन की बात नयी निकल पड़ी है। जब अंग्रेज पैसे की माया यहाँ ले आये, तभीसे यह चल पड़ा है। कल मैंने एक भाई से एक तुकबंदी सुनी। उसमें उसने बताया था कि अंग्रेज अपने साथ क्या-क्या ले आये? 'अखबारों का ढेर ले आये, कानूनों का अंबार ले आये।' अखबारों का अंबार अब भी कम नहीं हुआ है। अखबारों के संपादक दिमाग में भला-बुरा जो भी आये, लिख-लिखाकर छाप मारते हैं। कानूनों के अंबार की बात भी ऐसी ही है। बहुत-से कठोर-से-कठोर कानून बना ही करते हैं। जाने कितने सौ कानूनों पर उन्होंने स्वीकृति के लिए दस्तखत की हो। ऐसे नये-नये कानून बनते हैं कि बेचारे वकीलों को भी फिर से उनका अभ्यास करना पड़ता है। रोज ही वे सुधारे, घटाये और बढ़ाये जाते हैं। दिमाग में पहले से बनी हुई धारणाएँ निकालकर नयी धारणाएँ बनानी पड़ती हैं। फिर भी बेचारे उसमें भूल कर ही बैठते हैं।

लेकिन सोचने की बात है कि आखिर इन कानूनों की जरूरत ही क्या थी? माताएँ अपने बच्चों को प्यार करती हैं, उन्हें भर पेट दूध पिलाती हैं तो क्या किसी कानून से बाध्य होकर पिलाती हैं? क्या कानून न हो तो माताएँ उन्हें दूध पिलाना, उनकी सेवा-सुश्रूषा करना छोड़ देंगी? साफ है कि वे निखालिस प्रेम से ही यह सब करती हैं। क्या बिना कानून के भूखा काम न करेगा? क्या वह खेतों में फसल खड़ी न करेगा? क्या बगैर कानून के व्यापारी व्यापार ही न करेगा? कौन-सा काम कानून के बगैर रुक जायगा? फिर इतने कड़े-कड़े कानून क्यों?

पैसे की बात भी ठीक ऐसी ही है। रविशंकर महाराज ने एक बार एक किसान से पूछा कि आप क्या पैदा करते हैं? उसने कहा: 'डालर की फसल खड़ी कर रहे हैं।' याने तम्बाकू जैसी फसलें लोग इसीलिए पैदा करते हैं कि उनसे डालर मिलते हैं। लेकिन समझने की बात है कि यह पैसा गाँव की चीज नहीं है। वह तो नासिक के छापाखाने में बनता है। उसीको आप लोग गाँवों में लाकर सब कुछ खरीद लेते हैं। आजकल तो बच्चे भी बेचे जाने लगे हैं, जैसे कि बैल। जिस तरह बैल-वाला बैल को बेचते समय उसके पालने-पोसने का खर्च माँगता है, उस तरह लड़के के ब्याह के समय लोग उसके पढ़ाने-लिखाने पर हुए खर्च की माँग करते हैं। इसी तरह विद्यार्थी भी विद्या बेचने लगे हैं। विलायत से पास होकर आये हुए लोगों के लिए पाँच सौ से कम वेतन चल ही नहीं सकता। इस तरह देखा जाय तो आज विद्या, कन्या, पुत्र, दूध, घी और सब कुछ बेचा जाता है और फिर सब कुछ खरीदना भी पड़ता है। बेचते समय भाव बाजार के हाथ में होता है और खरीद के समय भी वह शहरों के हाथ में ही रहता है। इस तरह की हरकतों से गाँवों में परिपूर्ण पारतन्त्र्य आ गया है। फिर ऐसी स्थिति में गाँवों को स्वराज्य मिले तो कैसे मिले?

## ग्रामसंकल्प अत्यावश्यक

ग्राम-स्वराज्य ग्राम-संकल्प से ही हो सकेगा। उसका आधार जमीन के सिवा और कुछ हो ही नहीं सकता। इसलिए जमीन सबकी कर देनी चाहिए। कच्चे माल का पक्का माल गाँव में ही तैयार किया जाय। गाँव अपनी आवश्यकताभर का अनाज गाँव में सुरक्षित रखे और उसके बाद ही उसे बेचे। सबको जमीन दी जाय। यदि उतनी जमीन न हो तो उन्हें ग्राम-उद्योग दें और उनके माल का हम लोग उपयोग करें। इन ग्रामोद्योगों की स्थापना और ये सारी बातें समझानेवाले सेवक भी होने चाहिए और उनके लिए सर्वोदय-पात्र की भी व्यवस्था की जाय। जैसा कि आज आप लोगों ने बताया, 'यह सूर्य और यह जयद्रथ—ये सर्वोदय-पात्र और ये सेवक', ऐसा ही होना चाहिए। इस तरह सामूहिक संकल्प से सारे भारत में एक दिन सर्वोदय-पात्र हो जायँ। व्यक्तिगत संकल्प तो पुराने जमाने की बात हो गयी। आज उसकी शक्ति कम पड़ गयी है। आज तो सामूहिक संकल्प ही करना पड़ेगा।

फिर, पुराने जमाने में भी सामूहिक संकल्प चलता ही था। हमारे शास्त्रों में लिखा है कि अमुक ऋषि ने १० महीने और १५ दिन उपवास किये। आप सोच सकते हैं कि उसने कैसे उपवास किये होंगे? एक बार का किस्सा सुनाता हूँ। गांधीजी के साथ हम लोगों का तय हो गया था कि जब वे उपवास (अनशन) करें तो हम सब भी उपवास शुरू कर देंगे। उन दिनों बापू येरवदा-जेल में थे। उन्होंने उपवास शुरू कर दिये तो हम लोगों ने भी शुरू कर दिये। अपेक्षा यह थी कि इस उपवास में असंख्य लोग जुट जायँगे। लेकिन जनता ने तो बापू को अकेले ही छोड़ दिया, जब कि उसने भी उपवास करना तय किया था। उस प्रसंग में बापू ने समझाया कि १७ आदमी तीन सप्ताह का उपवास करें तो सबके उपवास मिलकर एक साल के उपवास हो जायँ। इसी तरह वे ऋषि भी सामूहिक संकल्प ही किया करते थे और ये सामूहिक उपवास उस एक ऋषि के नाम पर जमा होते थे। उनके जप के बारे में भी यही बात थी। एक ब्राह्मण कहता जाय और हजार लोग एकाग्रता से उसे सुनें तो वह एक हजार बार जप माना जाता है। इस तरह कह सकते हैं कि पुराने जमाने में भी सामूहिक संकल्प चलता ही रहा।

आज तो इच्छा-शक्ति ही नहीं रही, इसलिए न तो व्यक्तिगत संकल्प हो रहे हैं और न सामूहिक ही। 'भारत छोड़ो' का सामूहिक संकल्प हुआ। छोटे-छोटे बच्चे भी उसके नारे लगाने लगे तो उसका फल भी हमारे सामने है। इसी तरह शान्ति-सेना और सर्वोदय-पात्र के लिए भी यदि सामूहिक संकल्प हो तो निश्चय ही एक दिन सारे भारत में वह मूर्तरूप धारण कर सकता है। हम अपने देश में इसी सामूहिक संकल्प का बल पैदा करना चाहते हैं।

हम लोग गायत्री-जप में भी यह नहीं कहते कि 'मेरी बुद्धि तेज हो' बल्कि यही कहते हैं कि 'हम लोगों की बुद्धि तेज हो।' उसे बोलनेवाला एक ही होता है, पर वह खुद को अकेला नहीं मानता। सभीकी ओर से मैं बोल रहा हूँ, यही समझता है। इस तरह हम सभी एक हैं, यह बात बड़े महत्त्व की है। सभी एक ही आत्मा हैं, यह ज्ञान पुस्तक में ही पड़ा रहे, इसके बदले यदि हम उसे अपने जीवन में उतारें तो उसकी मिठास का स्वाद भी हमें मिल सकता है। लेकिन हम वह स्वाद नहीं लेते और फालतू स्वादों के फेर में पड़ते हैं। अगर इसका स्वाद लेना शुरू कर दें तो सब कुछ फीका लगने लगे।

'साकर शेरडीनी स्वाद तजीने
कड़वो ते लीमडो घोल माँ रे।'

लेकिन शक्कर-ईख का स्वाद छोड़कर कड़ुवी नीम कौन पीयेगा? सारांश, हम हक ही आत्मा हैं इसका भान हमें होना चाहिए। यदि हम ऐसा विचारने लगें कि 'आन्तरिक भाव के रूप में हम सब एक ही हैं' तो हमारा इहलोक और परलोक दोनों का काम बन जायगा।

सर्वोदय-पात्र के द्वारा हम बच्चों को त्याग की भावना सिखा सकते हैं। नियमित रूप से प्रतिदिन उसमें अनाज डाला जाय तो नियमितता की भी शिक्षा प्राप्त होगी। आपके जिले की आबादी १२ लाख है। इसलिए तीन सौ सेवक हमें चाहिए।

बहनों के बीच

## यह निखालिस सौदेबाजी

डॉक्टर जोशी कह रहे थे कि यदि हम सर्वोदय-पात्र का अनाज दवा-दारू के काम लायें तो लोग प्रेम से देंगे। यदि जनता को यह न मालूम पड़े कि सीधा उन्हींके काम में न लगेगा तो उन्हें वह देने की प्रवृत्ति ही कैसे हो? अखरोट के पेड़ को पानी कौन देगा? वह तो ३० वर्ष बाद फलता है। इसलिए आप आज्ञा दें कि सर्वोदय-पात्र का उपयोग दवा-दारू के लिए किया जाय। लेकिन मैं समझता हूँ कि मेरा ऐसा करना सौदेबाजी होगी। अन्य बातों में हम सौदेबाजी करते हैं, पर क्या इसमें भी वह की जाय? समझने की बात है कि यह तो एक क्रान्ति का काम है। हमें लोगों में शक्ति पैदा करनी है। तन्दुरुस्ती के लिए तो आपको सम्पत्ति-दान ही देना चाहिए। लेकिन एक मुट्ठी अनाज देकर स्वास्थ्य-रक्षा करने की बात सोचें तो वह दो पैसा देकर वैकुण्ठ में स्थान पाने जैसा ही होगा। इसलिए हमें तो ऐसा करना चाहिए, जिससे कार्यकर्ता खड़े हो जायँ और काम करें। हमारा कल्याण किस बात में है, यह वे लोगों को समझायें। इस तरह दीर्घदृष्टि रखते हुए यह काम करना चाहिए। यह काम निष्काम भाव से होना चाहिए। तात्कालिक और संकुचित दृष्टि से नहीं, बल्कि दीर्घदृष्टि से देखें। विश्वास रखिये कि इसमें से बहुत अधिक शक्ति पैदा होगी। ● ● ●

महेसाणा २६-१२-'५८

# शान्ति-सेना में स्त्रियाँ भाग लें

हिन्दुस्तान में बहुत पुराने जमाने से आज तक संस्कृत और धर्म के रक्षक रूप में स्त्रियों ने बहुत बड़ा काम किया है, यह सभी मानते हैं। संस्कृति और धर्म सेवा का एक विषय है, जिसमें संयम की अत्यधिक आवश्यकता हुआ करती है। संयम के विषय में स्त्रियाँ पुरुषों से अधिक योग्यता रखती हैं, यह सर्वमान्य बात है; इसीलिए संयमप्रधान संस्कृति की रक्षा में स्त्रियों का बहुत बड़ा भाग रहा है। अतएव वे निःसन्देह अभिनन्दन की पात्र हैं।

### बाहरी और घरेलू काम मिलकर ही पूर्ण जीवन

समाज के कामों में स्वाभाविक रूप में भेद-भाव आ ही जाता है। स्त्री घर के भीतर के काम करे और पुरुष बाहर के, यह भेद तो है ही। स्त्री मुख्यतः घर के काम करे और पुरुष बाहर के काम, ऐसी व्यवस्था सारी दुनिया में चलती है और हमारे यहाँ भी। हमारे देश में वह विशेष रूप में है। लेकिन व्यवस्था का यह अर्थ नहीं कि पुरुष घर के काम में ध्यान ही न दे। यह विभाजन गलत माना जायगा। इसी तरह बाहरी कामों में स्त्रियों का ध्यान न देना भी एकांगी ही कहा जायगा। पुरुषों को रसोई का काम आना ही चाहिए। तभी उनका जीवन पूर्ण होगा, तभी उनका विकास होगा। इसी तरह स्त्रियों को भी बाहरी काम का अवसर मिलना चाहिए।

खासकर आज तो स्त्रियों को बाहरी कामों में ध्यान देना ही चाहिए। यह उनके लिए बड़े महत्त्व की बात है। कारण पुरुषों ने आज जो समाज-व्यवस्था बनायी है, वह ठीक नहीं है। आप देख ही रहे हैं कि तीस-चालीस वर्षों में दो-दो महायुद्ध हो चुके और तीसरा भी कब छिड़ जायगा, कहा नहीं जा सकता। युद्ध के क्या-क्या भीषण परिणाम होते हैं और उसमें धन-जन की कितनी हानि होती है, यह तो आप जानते ही हैं। आज अणुबम और हाइड्रोजन बम के प्रयोग हो रहे हैं, जिनसे दुनिया में तरह-तरह की बीमारियाँ पैदा हो रही हैं। जन्म से ही बालक अक्षम पाये जाते हैं। अगर यही चलता रहा तो बाहर का बिगड़ा हुआ वातावरण बाहर ही सीमित न रह कर अन्दर भी प्रवेश पा जायगा और पा ही रहा है। इसलिए अभी से स्त्रियाँ बाहर के कामों में ध्यान दें और पुरुषों पर अंकुश रखें।

### स्त्रियाँ आगे आयें

गाँवों में दंगा-फसाद हो और उस समय स्त्रियाँ हिम्मत के साथ आगे आकर खड़ी हो जायँ तो लड़ाई-झगड़ा करने-वाले पुरुष उन्हें देखकर शरमा जायँगे। मार सहकर भी वे हिम्मत के साथ खड़ी रहें तो निश्चय ही शान्ति हो सकेगी। इसलिए शान्ति-सैनिकों का काम सफल बनाने के लिए स्त्रियाँ आगे आयें, शान्ति-सैनिक बनकर दंगे की जगह पहुँचकर शान्ति करायें। मैंने आशा की है कि सारे भारत में ऐसे शान्ति-सैनिक खड़े हो जायँगे। इन शान्ति-सैनिकों को खड़ा करने के लिए लोगों की सम्मति चाहिए। इसलिए घर-घर में सर्वोदय-पात्र हो और माताएँ अपने बच्चों के हाथ से प्रतिदिन उसमें मुट्ठी भर अनाज डलवायें। १५ दिन बाद एक दिन निश्चित किया जाय और उस दिन लड़कियाँ गाते-बजाते जुलूस बनाकर उस अनाज को वहाँ जाकर पहुँचायें, जहाँ वह एकत्र किया जाता हो। इस अनाज का उपयोग शान्ति-सेना के काम में ही किया जाय। महेसाणा के हर घर में सर्वोदय-पात्र रखा जाय। यह काम स्त्रियाँ उठा लें और उसे पूरा करें; क्योंकि बच्चों के हाथ से प्रतिदिन मुट्ठी भर अनाज सर्वोदय-पात्र में डलवाने का काम स्त्रियाँ ही कर सकती हैं। ● ● ● ●

अनुक्रम

१. नये कार्यकर्ता तैयार करें··· कोबा २२ दिसंबर '५८ पृ० २१७
२. एक ओर सर्वोदय-पात्र··· डाँगरवा २४ ,, ,, ,, २१८
३. शान्ति-सेना में स्त्रियाँ··· महेसाणा २६ ,, ,, ,, २२०

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन, राजघाट, काशी द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित
फोन : १२८५ तार—प्रकाशन, राजघाट, काशी।